अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका

4.2 परिकल्पनाओं का सत्यापन

D-256

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका :–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के अगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूहों में विभाजित कर विश्लेषण तथा परिणाम ज्ञात किया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अन्तर्गत शोध अध्ययन की तुलना अनेक परीक्षणों द्वारा शोध के उददे्श्यों का निर्णय प्राप्त परिणामों द्वारा किया जाता है।

4.2 परिकल्पनाओं का सत्यापन :–

प्रस्तुत अध्ययन में उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेशण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं की जाँच तथा स्वीकृति/अस्वीकृति प्रदत्तों के आधार से किया है। वह प्रदत्त निम्न तालिकाओं में प्रस्तुत किये है।

परिकल्पना – 1

विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना को जॉचने के लिए 'F' परीक्षण (ANOVA) प्रसरण विश्लेषण का उपयोग किया है।

तालिका : 4.1 विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की प्रसरण विश्लेषण तालिका

Source of Variance	df	Sum of Squares	Mean Sq. (Variance)	'F' Value	Result
(1) Among the mean condition	K-1 (3-1) =2	120.43	60.22	0.66	NS
(2) Within Condition	N-k (60-3) = 57	5235.5	91.82		
Total	59				

0.05 विश्वास स्तर पर 3.15 > 0.66

विश्लेषण :

$df_1 = 2$ तथा $df_2 = 58$ के लिए 'F' तालिका में दिया गया मूल्य 0.05 विश्वास स्तर के लिए 3.15 है। प्राप्त 'F' का मूल्य 0.66 है। यह 0.05 विश्वास स्तर पर **सार्थक** नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई **सार्थक** अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :

अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विभिन्न जन्मक्रम का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इसका कारण यह हो सकता है कि तीनों क्रम के विद्यार्थियों को घर में एक जैसी शैक्षिक सुविधा मिलती होगी। उनकी पढ़ाई एक नियोजित वातावरण में होती है। इसलिए जन्मक्रम और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 2

विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना को जॉच ने के लिए 'F' परीक्षण (ANOVA) का उपयोग किया है।

तालिका : 4.2 विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के समायोजन की प्रसरण विश्लेषण तालिका

Source of Variance	df	Sum of Squares	Mean Sq. (Variance)	'F' Value	Result
(1) Among the mean condition	K-1 (3-1) =2	14.95	7.48	0.951	NS
(2) Within Condition	N-k (60-3) = 57	448.05	7.86		
Total	59				

0.05 विश्वास स्तर पर 3.15 > 0.951

विश्लेषण :

$df_1 = 2$ तथा $df_2 = 58$ के लिए 'F' तालिका में दिया गया मूल्य 0.05 विश्वास स्तर के लिए 3.15 है। प्राप्त 'F' का मूल्य 0.951 है। यह 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :

अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विभिन्न जन्मक्रम के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जन्मक्रम एवं समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण यह हो सकता की घर में अभिभावक सभी जन्मक्रम के बच्चों के साथ एक जैसा व्यवहार करते होगें। घर, स्कूल तथा समाज में ही जन्मक्रम के आधार से भेदभाव किया जाता नहीं होगा। इसलिए जन्मक्रम और समाजोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 3

शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में कोई सार्थक सम्बंध नहीं है।

तालिका : 4.3

शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन का सह–संबंध

	N	Mean	*r*
शैक्षिक उपलब्धि	60	74.97	0.093
समायोजन	60	12.69	

0.05 विश्वास स्तर पर 0.325 > 0.093

परिकल्पना जाँच करने के लिए शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में सहसंबंध ज्ञात किया शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में सहसंबंध $r = 0.093$ इतना है यह 0.05 विश्वास स्तर 0.325 से कम है। अर्थात् सार्थक नहीं है। यह सहसंबंध अल्प प्रकार का है इसलिए शैक्षिक उपलब्धि

और समायोजन में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में कोई संबंध नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन अलग–अलग स्वतंत्र संप्रत्यय है। इसका एक दूसरे से कोई संबंध नहीं है। इसलिए शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में सहसंबंध नहीं है।

परिकल्पना – 4

लिंग के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

यह परिकल्पना जाँच करने के लिए 't' परीक्षण किया जिसका मान निम्न तालिका में है।

तालिका 4.4 लिंग के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि में अंतर

Sex	N	mean	SD	df	't'
लड़के	30	73.27	10.36	58	1.216
लड़कियाँ	30	76.33	9.14		

0.05 विश्वास स्तर पर = 2.00 > 1.216 't'

विश्लेषण :

तालिका क्रमांक 4.4 का अध्ययन करके यह स्पष्ट होता है कि लड़के एवं लड़कियॉ के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 73.27 एवं 76.33 के प्राप्त 't' परीक्षण का मान 1.26 है जो कि विश्वास 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस कारण यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः लिंग के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :–

लड़कियो की शैक्षिक उपलब्धि लड़कों की अपेक्षा थोड़ी ज्यादा है लेकिन लड़के एवं लड़कियाँ के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण यह हो सकता की लड़के एवं लड़कियाँ की पूरी पढ़ाई एक नियोजित वातावरण में होती हैं। सभी को, एक समान शैक्षिक सुविधा, पाठ्यक्रम परीक्षा आदि एक जैसी होती है इसलिए लिंग के अनुसार दोनों में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना – 5

लिंग के अनुसार समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

यह परिकल्पना जाँच करने के लिए 't' परीक्षण किया गया। जिसका मान अग्रांकित तालिका में है।

तालिका क्रमांक 4.5 लिंग के अनुसार समायोजन में अंतर

Sex	N	Mean	SD	df	t
लड़के	30	13.27	3.22	58	1.566
लड़कियाँ	30	12.10	2.51		

0.05 विश्वास स्तर पर = 2.00 > 1.566 't'

विश्लेषण :

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करके यह स्पष्ट होता है कि लड़के लड़कियों की समायोजन का मध्यमान क्रमांकः 13.27 एवं 12.10 है। प्राप्त 't' परीक्षण का मान t = 1.566 है जो कि विश्वास स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। इस कारण यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः लिंग के अनुसार समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :–

लिंग के अनुसार समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। लड़के एवं लड़कियों का समायोजन में अंतर नहीं है।

इसका कारण यह हो सकता कि समाज, अभिभावक एवं स्कूल में लड़के एवं लड़कियाँ ऐसा भेद नहीं करतें है। दोंनों के साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं। इसलिए लिंग के अनुसार समायोजन करने में अंतर नहीं होता।